पशु प्रजनन प्रक्षेत्र संचालन हेतु स्टेण्डर्ड ओपरेटिंग प्रोसिजर

पशु पालन विभाग अन्तर्गत प्रदेश में 8 शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र संचालित किये जा रहे है। पक्षेत्र स्थापना का मूल उद्देश्य विभिन्न नस्लों के पशुओं को संरक्षण संवर्धन कर विभाग की विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत पशु पालकों को नस्ल सुधार हेतु उपलब्ध करवाना है।

आदर्श पशु प्रजनन प्रक्षेत्र संचालन में निम्नलिखित बिन्दुओं का समावेश है –

अ बायोसिक्यूरिटी मेजर्स

1 प्रक्षेत्र क्षेत्र संरक्षण – पशु प्रजनन प्रक्षेत्र के आदर्श संचालन हेतु प्रक्षेत्र की सम्पूर्ण भूमि की फैंन्सिंग किया जाना अनिवार्य है। फैंसिंग द्वारा प्रक्षेत्र पर बाहर के पशुओं, व्यक्तियों, वाहन का आगमन पूर्णतः प्रतिबंधित होना चाहिए

2 पशु शेड का निर्जन्तुकरण – प्रक्षेत्र पर उपलब्ध पशु शेडों का नियमित रूप से चूना की पुताई एवं छिडकाव द्वारा निर्जन्तुकरण किया जाना चाहिए। पशु शेड का पैडॉक एवं अन्य पक्की भूमि का डिस्इन्फक्टेंट द्वारा नियमित रूप से धुलाई की जाना चाहिए। शेड की भूमि समतल एवं खुरतदी होना चाहिए, चिकने फर्स पर पशुओं के फिसलने की संभावना बनी रहती है।

3 प्रक्षेत्र पर बायोसेक्योरिटी के तहत पशु शेड के आगमन द्वार पर फुट बाथ का निर्माण किया जाना चाहिए जिसमें डिस्इन्फेक्टेंट का मिश्रण तरल रूप में उपलब्ध हो समस्त पशु उक्त फुटबाथ से होकर ही शेड के अंदर जाऐं, जिससे उनके खुर में संक्रमण की आशंका कम होगी इसी प्रकार शेड के आगमन द्वार से पूर्व वाहन के पहियों हेतु टायर बाथ होना चाहिए, समस्त वाहन टायर बाथ से गुजर कर ही शेड परिसर में जायें।

4 पशुओं की पेजल व्यवस्था –प्रक्षेत्र के पशुओं के लिये उपयोग में लाये जाने वाला जल साफ एवं क्लोरीन से उपचारित होना चाहिए ।

5 सेग्रिगेशन शेड– प्रक्षेत्र के अस्वस्थ पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखकर उपचार करने की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे संक्रमण का फैलाव सीमित रहे।

6 कोरेंटाइन शेड– प्रक्षेत्र में नवीन पशुओं के इन्डक्शन /समावेश/ स्थापना के समय पशुओं को रखने हेतु प्रथक से कोरेंटाइन शेड की व्यवस्था होनी चाहिए। नवीन पशुओं को कोरेंटाइन शेड में रखकर विभिन्न रोगों के टेस्ट करवाकर ही प्रक्षेत्रों में पशुओं का इन्डक्शन करना चाहिए।

7 स्टाफ सेग्रिगेशन– कोरेंटाइन अथवा सेग्रिगेशन की स्थिति में पशुओं के प्रबंधन (आवास, खाद्यान्न, उपचार आदि कार्य हेतु) प्रथक स्टाफ, चिकित्सक एवं श्रमिक की व्यवस्था की जानी चाहिए जो कि स्पेसिफिक उन्ही पशुओं की देखभाल करें।

8 पशु रोग टीकाकरण– प्रक्षेत्र पर उपलब्ध पशुओं हेतु पशु चिकित्सीय परामर्श एवं आवश्यकतानुसार समय –समय पर विभिन्न रोगों के बचाव के लिये टीकाकरण का कार्य किया जाना चाहिए।

9 <u>मृत पशु का शव परीक्षण</u>– प्रक्षेत्र के पशु की मृत्यु होने पर मृत पशु का शव परीक्षण निकट की पशु चिकित्सा संस्था के पशु चिकित्सक द्वारा कराया जाना चाहिए एवं परीक्षण का कार्य प्रक्षेत्र से दूर किया जाना चाहिए । शव परीक्षण उपरांत शव को चूना डालकर भूमि में दाफना देना चाहिए ।

10 <u>उपचार</u>– प्रक्षेत्र के पशु रोग के उपचार के दौरान उपयोग में लाई गई सामग्री गर्भाशल स्त्राव, गर्भपात/ वत्स उत्पादन उपरांत प्लेसेंटा पदार्थ को तत्काल पृथक कर प्रक्षेत्र की सीमा से दूर लेजा कर भूमि में गाढ़ देना चाहिए एवं शेड की डिस्इन्फेक्टेंट के द्वारा पवनवपवपवधुलाई उपरांत चूने का छिडकाव किया जाना चाहिए।

<u>ब फीडिंग शेड्यूल</u>–

Class of animal	**Concentrate mixture in Kg(per day per animal)**		**Roughage in Kg (per day peranimal)**		**Remark**
	maintaince	production	green	dry	
Cows in milk	1.0 Kg	0.5 Kg.For every litre of milk produced max. 4 kg	20.00Kg	4 Kg	If the wheat staw is the only roughage available add 0.5 Kg conc. maintaince ration
Buffaloes in milk	1.5 Kg	0.5 Kg.For every litre of milk produced max. 5 kg	20.00Kg	4 Kg	
Dry cows	1.0 Kg	----	20.00Kg	4 Kg	
Dry buffaloes	1.5 Kg	----	20.00Kg	4 Kg	
Down calvers	3.5 Kg(during last) 90 days	----	25.00Kg	4 Kg	
Growing bulls(cow/buff.) 1.5 to2.5 years bulls	2.5to 3 Kg	NIL	20.00Kg	5 Kg	
When greens are not available dry 8 Kg roughage be given					
<u>2.5 to &3years</u>	3.0 Kg	NIL	20.00Kg	5 Kg	
(In non ... availablity of green 10 Kg dry roughage be given)					

Bullocks	2.0 Kg	When in work	20.00Kg	4 Kg	
	1.0 Kg	When not in work	20.00Kg	4 Kg	
calves (a) 0 to 2 month (b) 2 to 6 month (c) 6 to 12 month (d) 12 to 24 month (e) 24 to 36 month	Milk adlib 0.250kg 0.5 kg 1.0kg 1.5kg		green calf stater is given calf stater is given 5-10kg 10-15kg 15-20kg		Dry good quality hay 2kg 2kg 3kg 3kg

Exotic animal maintaince ration is 2.00 kg /animal &for calves 3-4month 1.6kg,4-6month 1.8kg 6-12month 2kg.

स ब्रिडिंग शेड्यूल – प्रक्षेत्र पर उपलब्ध समस्त पशुओं का ब्रिडिंग संबंधित रिकार्ड सुव्यवस्थित रूप से संधारित होना चाहिए प्रत्येक पशु का पेडिग्री रिकार्ड जिसमें उसके माता पिता का उत्पादन संबंधित समस्त जानकारी का समावेश होना चाहिए। प्रक्षेत्र पर उपलब्ध प्रत्येक पशु का ब्रिडिंग प्लान हो एवं उसके संबंधित जानकारी प्रत्येक पशु के समकक्ष दर्शाई गई होना चाहिए।

भारतीय व विदेशी नस्ल की गाय/भैंस की नस्ल की प्रमुख विशेषताऐं एवं पहचान

क्र	नस्ल	मूल स्थान एवं वितरण फैलाव	शारीरिक विशेषताऐं	प्रथम बार ब्याने पर आयु
1	साहीवाल	पंजाब,(पाकिस्तान से लगा हुआ भाग), हरियाणा	गहरा लाल रंग से कत्थई सींग छोटे व मोटे, भारी शरीर व त्वचा ढीली होने के कारण लोला उपनाम माथा व नथूना चौडा, भारी व छोटी टांगे वक्ष स्थल चौडा दुग्ध सीरा व अयन विकसित	3.5 वर्ष
2	गिर	गुजरात में काठियावाड जिला	लाल या काला व सफेद रंग के घब्बे भारी भरगम ललाट लंबे लटके हुये घुमाव दार कान सींग लम्बे मोटे तथा कुन्डलाकर अयन मध्यम रूप से विकसित तथा पीछे तक फैला हुआ।	4 वर्ष

3	हरियाणा	रोहतक हिसार, करनाल	सफेद शरीर रचना सुडोल व सुद्धढ माथा सकरा व चपटा आंखे बडी गर्दन लंबी व पतली अयन विकसित पूंछ का छोर काला	4- 4.5 वर्ष
4	थारपार कर	गुजरात में कच्छ का रण क्षेत्र	रंग सफेद मध्यम आकार ललाट चौडा नथूने चौडे गर्दन पतली	3.5 से 4 वर्ष
5	निमाडी	निमाड क्षेत्र	रंग लाल मध्य आकार सूढोल शरीर सफेद रंग के धब्बे माथा उभरा हुआ सींग पीछे की ओर	4- 4.5 वर्ष
6	मालवी	मालवा क्षेत्र	गहरा छोटा गठीला बदन सलेटी रंग छोटे कान छोटी गर्दन सीधी कमर मांसल पेर	3.5 वर्ष
7	जर्सी	जर्सी द्वीप	सुगठित शरीर लाल रंग सीधी कमर बडा पेट चंचल स्वभाव ज्यादा गर्मी सहने की क्षमता	24 माह
8	मुर्रा	रोहतक करनाल हिसार	स्याह काला रंग चिकनी त्वचा सींग छोटे गर्दन पतली पूंछ लंबी बडा विकसित अयन	43 माह

<u>द पशु आवास व्यवस्था-</u> पशु घर पशुओं के लिये आराम दायक हो तथा उसमें उनकी उचित खिलाने व पिलाने की सुविधाओं का प्रावधान हो, उसमें पशुओं को स्वस्थ रखने हेतु पूर्ण स्वस्थता रखी जावे पशु शाला में हवा तथा रोशनी का समुचित प्रबंध हो एवं पशु घर का एक तिहाई हिस्सा ऊपर से छत द्वारा ढका हो।

1 पशु आवास घर की दिशा पशु आवास की दिशा पूर्व से पश्चिम की ओर हो जिससे दिन के समय अधिक धूप उत्तर एवं दक्षिण भाग में पडे।

2 पशु आवास की दीवारें पशु घर की मुख्य दीवार जिस पर छत बनानी हो कम से कम 3 मीटर ऊंची अवश्य होनी चाहिए बीच की दीवारें भी कम से कम 1.5 मीटर ऊंची रखनी चाहिए ।

3 छत पशु आवास की छत उचित ऊंचाई पर खड़ी दीवारों पर ही बनाई जाये ताकि बाहरी वर्षा, गर्मी एवं सर्दी से बचाव हो सके। छत की दीवार को कम से कम 0.75 मीटर आगे निकली होनी चाहिए छत के लिये एस्बैस्टस की चादरों का प्रयोग किया जा सकता है।

4 फर्श पशु आवास निर्माण में फर्स का विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। फर्स सीमेंट या कंकरीट का पक्का बनाया जा सकता है तथा इसे छत से ढके हुए भाग तक विस्तारित किया जाना चाहिए । फर्स फिसलन वाला न हो और पशुओं को फिसलने से बचाने के लिए उसकी ऊपरी सतह खुरदरी होनी चाहिए। दोनों तरफ की ढलान निकास नाली की तरफ एक इंच प्रतिमीटर के हिसाब से हो ताकि पशुओं के मूत्र की निकासी तथा फर्स की सफाई व धुलाई आसान हो। समय-समय पर फर्स की कीटाणु नाशक घोल से धुलाई अथवा छिडकाव अवश्यक करना चाहिए।

5 पशु घर की सफाई पशु आवास ग्रह की सप्ताह में कम से कम 1 बार फिनाइल का घोल (एक भाग फिनाइल 50 से 100 भाग पानी में) पशु घर के फर्स पर छिडकना चाहिए इसके अलावा महीने में कम से कम एक बार कीटनाशक घोल बनाकर (मेलाथियोन एवं पेराथियोन) बाड़े की फर्स और छत पर छिडकाव किया जाना चाहिए।इन कीटनाशक दवाओं से बच्चों को दूर रखें । पशुओं को चारा पानी देने के बाद ही दवाओं का छिडकाव में प्रयोग करें यह सुनिश्चित करें कि पशुओं का चारा पानी कीटाणु नाशक से दूषित न हो एवं दवाओं का घोल सही मात्रा एवं सही अनुपात में बनावें। ध्यान रहे कि छिडकाव में दवाई का घोल पशु के मुंह, आंख, कान,एवं नाक आदि में न पड़े।

6 पशु आवास घरों का प्रति पशु क्षेत्रफल

डेयरी पशुओं के आवास हेतु एन डी आर आई द्वारा संस्तुत क्षेत्रफल

पशु का प्रकार	फर्स हेतु क्षेत्र वर्ग मीटर में		नांद हेतु क्षेत्र	पानी हेतु क्षेत्र
	ढका क्षेत्र	खुला क्षेत्र	वर्ग मीटर में	वर्ग मीटर में
बछडे, बछडियां आयु आठ सप्ताह से कम	1.0	2.0	40-50	10-15
बछडे, बछडियां आयु आठ सप्ताह से अधिक	2.0	4.0	40-50	10-15
ओसर पशु	2.0	4-5.0	45-60	30-45
वयस्क गाय	3.5	7.0	60-75	45-65
वयस्क भैंस	4.0	8.0	60-75	60-70
ब्याने योग्य पशु गाय/भेंस	12.0	20-25	60-75	60-75
सांड	12-15	25-30	60-75	60-75

य – पशु छटनी

प्रक्षेत्र के पशुओं को हर त्रैमास मे नियमित रूप से परीक्षण कर अनुपयोगी तथा अमितव्ययी पशुओं की छटनी की कार्यवाही की जानी चाहिए। प्रक्षेत्र पर वृद्ध, अपंग, प्रजनने के लिये समस्या ग्रस्त रोग पीडित पशुओं को छटनी में सम्मिलित किया जावे इस संबंध में निम्न बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए–

1. ऐसे पशु जिनका प्रथम ब्यात में दुग्ध उत्पादन कम है ऐसे उत्पादक पशुओं के दूसरे ब्यात के 5 माह का दुध उत्पादन की समीक्षा करने के पश्चात ही छटनी की प्रस्ताव की जावे।
2. जिन पशुओं की जांच के समय वजन सामान्य से कम हो
3. लघु दुग्ध काल तथा शीघ्र शुष्क काल पशु गर्भपात का इतिहास
4. पशु संक्रामक रोग जैसे– मुंह पका, खुरपका, गलघोंटू, या दीर्घ कालीन रोग जैसे– छय रोग, जोन्स रोग इत्यादि और इस कारण अनुत्पादक हो जाये या प्रजनन योग्य न रहें।
5. लूले, लंगड़े किसी रोग से पीडित
6. स्तन रोग या टीट ब्लाइंड, बार–बार पेट फूलना या सतत बीमार रहने वाले तथा लगातार औषधि उपचार दिये जाने के बाबजूद भी पीडित/अस्वस्थ पशु।

छटनी हेतु प्रक्षेत्र पर विभिन्न नस्ल के निम्नानुसार मापदण्ड निर्धारित किये जाते है

कमांक	प्रक्षेत्र का नाम	पशु की नस्ल	दुग्ध उत्पादन लीटर में
1	प.प्र.प्र. गढी बालाघाट इमलीखेडा छिन्दवाड़ा	संकर शाहिवाल	1000
2	प.प्र.प्र भदभदा भोपाल	जर्सी	2000
3	प.प्र.प्र रतोना सागर	मुर्रा थार पारकर	2000 1000
4	प.प्र.प्र मिनोरा टीकमगढ	हरियाणा	1000
5	प.प्र.प्र आगर शाजापुर	मालवी	1000

(म) चारा संरक्षण –

साल भर हरा चारा मिलना, खास कर गर्मी के मौसम में बहत कठिन होता है वर्षा ऋतु के बाद जब हरा चारा प्रचूर मात्रा मेंउपलब्ध रहता है तो उसे साइलेज अथवा हे बनाकर संरक्षित कर सकते हैं चारे के कमी के समय यह हरे चारे का अच्छा विकल्प हो सकता है। क्यों कि इस प्रक्रिया में हरे चारे के सभी गुण इसमें संरक्षित रहते है।

1 **साइलेज–** यह अचार की भांति हरा चारा है ंजो सुपाच्य है और पशु इसे बहुत स्वाद से खाते है। एक दाल वाली फसलें जैसे ज्वार, मक्का, बाजरा, संकर, नेपियर जई इत्यादि के हरे चारे से अच्छी गुणवत्ता वाला साइलेज बनता है क्योंकि इसमें कार्बोहाईड्रेट की मात्रा अधिक होती है। उपरोक्त चारे को आधी फसल में फूल आने पर खेते से काटकर फिर छोटे –छोटे टुकडों के कुक्टी करके बाडे या खेत में जहां पानी एक्त्रित न होता हो गड्ढे में दबाकर साइलेज बनाया जा सकता है। एक घन मीटर (एक मीटर लंबा, एक मीटर चौडा, एक मीटर गहरा) में लगभग 5 क्विंटल कुक्टी चारा दबाया जा सकता है। गडढे में चारे को अच्छी प्रकार से दबाकर भरना चाहिए ताकि बीज की हवा निकल जाये। जमीन के एक फिट उपर तक कुक्टी भर कर पालिथीन से डककी मिट्टी डाल दें और गोबर सेलिपाई कर दें कुछ दिन बाद मिटटी घंसती या फटती है तो उपर और मिटटी डालकर छेड बंद कर देना चाहिए। जिससे गडढे में हवा न घुसे। 40–45 दिन में साइलेज तैयार हो जाता हें खिलाने के लिए आवश्यक मात्रा भर ही निकालें एक बार गडढा खोलने के बाद यथा शीघ्र उसका उपयोग कर लें।

2 **है–** मुलायम तने वाली घास जैसे जै, जौ,लूसन, आदि को सुखाकर है बनाया जाता है हरी फसल को काटकर 5 से 10 किलो के बंडल बनातेक है बंडल एक दूसरे के सहारे खडा कर धूप मे सुखाए जाते है। बंडल को ऐसा रखें कि फूल वाला हिस्सा उपर रहे। सुखाने के पक्रिया में जगह बदलें ताकि सभी बंडल डीक से सूख जायें। बंडल न बनाकर पौधों को तार के सहारे खडा करके भी सुखाया जा सकता है अच्छी प्रकार से सुखे बंडल/पौधों को एक जगह सूखे स्थान पर जमा कर सकतेक है। । हे को कुक्टी करके सूखे कमरे में भी रख सकते है।

पशु टीकाकरण

क्र	टीका का नाम	पहला डोज	दूसरा डोल	बाद में
1	खुरपका मुह पका	चार माह की उम्र में	09 माह के बाद	प्रत्येक वर्ष
2	गलघोटू	6 माह	–	प्रत्येक वर्ष
3	बी क्यू	6 माह	–	प्रत्येक वर्ष
एक से अधिक बीमारियों के संयुक्त टीके				
4	गलघोटू व लंगडाा बुखार	6 माह की उमग्र में	–	प्रत्येक वर्ष
5	खुरपका मुंह पका एवं गलघोंटू का संयुक्त टीका	4 माह की उम्र में	9 माह की उम्र में	प्रत्येक वर्ष
6	खुरपका मुंह पका गलघोंटू एंव। लंगडा बुखार का संयुक्त टीका	4 माह की उम्र में		प्रत्येक वर्ष
7	ब्रूसीलोसिस	4 से 8 माह की उम्र के केवल बछियों को (जीवन में एक बार)		

अन्य प्रक्षेत्र व्यवस्था

1 प्रक्षेत्र में पशु चिकित्सा परामर्श एवं आवश्यकतानुसार पशु उपचार एवं पशु रोग जांच, पशु रोग टीकाकरण का कार्य होना चाहिए।

2 प्रक्षेत्र पर उत्पादित सांडों को मापदण्डानुसार एवं निर्धारित टेस्ट (Brucelosis,T.B,J.D, Camploybacteriosis,Vibriosis, Trichomoniasis)कराते हुऐ विभिन्न योजनाओं में प्रदाय किया जाना चाहिए।

3 पशु प्रजनन प्रक्षेत्रों में निम्नलिखित अभिलेखों का संधारण किया जाना चाहिए–

(अ) पशु शाला के अभिलेख– पशुओं का स्टाक रजिस्टर, उत्पादन अभिलेख, दुग्ध वितरण रजिस्टर, गर्भित पशु रजिस्टर, प्रजनक सांड रजिस्टर , पशु ब्याने का रजिस्टर, पशु स्वास्थ्य रजिस्टर, पशु आहार रजिस्टर, पशु वंशावली, पशु संतति अभिलेख।

(ब) डेयरी फार्म अभिलेख– श्रमिक उपस्थिति रजिस्टर, चारा उत्पादन रजिस्टर, चारा सप्लाई रजिस्टर, मस्टर रोल, स्टॉक रजिस्टर

(स) सामान्य अभिलेखं – केश बुक, लेजर, बिल भुगतान बुक, इन्वेंट्री बुक उपस्थिति एवं वेतन रजिस्टर